भगत नामदेव - सबद ३

आनीले कुमभ भराईले ऊदक ठाकुर कउ इसनानु करउ ॥

रागु आसा, भगत नामदेव, गुरु ग्रंथ साहिब, ४८५

आनीले कुमभ भराईले ऊदक ठाकुर कउ इसनानु करउ ॥
बइआलीस लख जी जल महि होते बीठलु भैला काइ करउ ॥१॥
जत्र जाउतत बीठलु भैला ॥
महा अनंद करे सद केला ॥१॥ रहाउ ॥
आनीले फूल परोईले माला ठाकुर की हउ पूज करउ ॥
पहिले बासु लई है भवरह बीठल भैला काइ करउ ॥२॥
आनीले दूधु रीधाईले खीरं ठाकुर कउ नैवेदु करउ ॥
पहिले दूधु बिटारिओ बछरै बीठलु भैला काइ करउ ॥३॥
ईभै बीठलु ऊभै बीठलु बीठल बिनु संसारु नही ॥
थान थनंतरि नामा प्रणवै पूरि रहिओ तूं सरब मही ॥४॥२॥

सार: खोज और अनवेषण का रास्ता आसान नहीं है। यह हमसे कहता है कि हम अपने पुराने धारण किए गए विश्वासों को छोड़ दें और धीरे-धीरे मन को पिछली आदतों से मुक्त करें जो सत्य और वास्तविक स्वरूप की हमारी समझ को धुंधला कर देती हैं। यह यात्रा ईमानदारी और साहस की माँग करती है क्योंकि यह अक्सर उन बातों को चुनौती देती है जो हमें परिचित और सुरक्षित लगती हैं। सत्य कोई ऐसी वस्तु नहीं जिसे आँख मूँदकर स्वीकार कर लिया जाए, इसको खोजा और अनुभव किया जाता है। यह जिज्ञासा, चिंतन और प्रत्यक्ष अनुभूति के माध्यम से प्रकट होती है। जब हम सवाल करने का साहस करते हैं तभी गहन जवाब अपने आप सामने आने लगते हैं।

आनीले कुमभ भराईले ऊदक ठाकुर कउ इसनानु करउ ॥

जल का घड़ा लाकर देवता की मूर्ति के स्नान के लिए चढ़ाया जाता है। यह पूजा की विडंबना को उजागर करता है जिसमें निर्जीव पत्थर की वंदना की जाती है जबकि जीवित प्राणियों की गरिमा और सम्मान की उपेक्षा होती है।

बइआलीस लख जी जल महि होते बीठलु भैला काइ करउ ॥१॥

जल में बयालीस लाख जीव-प्रजातियाँ वास करती हैं जिनमें वही सर्वव्यापी चेतना विद्यमान है। हमें क्या करना चाहिए। यह इस जीवनदाता शक्ति का सम्मान करने के लिए किए गए अनुष्ठानों की निरर्थकता पर सवाल उठाता है जो विरोधाभासी रूप से जीवन को नाश की ओर ले जाते हैं। (१)

जत्र जाउतत बीठलु भैला ॥

मैं जहाँ भी जाता हूँ, वही सर्वव्यापी दिव्य ऊर्जा हर जगह विद्यमान है। यह सृष्टि की एकता का बोध है।

महा अनंद करे सद केला ॥१॥ रहाउ ॥

वह अनंत काल तक परम सुख में आनंदित रहता है। यह जीवन के सभी रूपों में पवित्रता को पहचानते हुए, सचेत भक्ति का प्रतीक है। (१)(विराम)

आनीले फूल परोईले माला ठाकुर की हउ पूज करउ ॥

देवता की मूर्ति को पूजा के रूप में माला से सजाने के लिए, फूल तोड़े जाते हैं। यह प्रथा प्रसाद की पवित्रता पर सवाल उठाती है जहाँ जीवित पुष्पों का जीवन त्यागकर निर्जीव को सजाया जाता है।

पहिले बासु लई है भवरह बीठल भैला काइ करउ ॥२॥

भँवरे ने पहले ही उस पुष्प की सुगंध को अपनाकर लिया है, उस भँवरे में भी वही सर्वव्यापी चेतना निवास करती है। हम क्या करें। यह गुण और दोष की अवधारणाओं पर सवाल उठाता है क्योंकि सभी एक साँझा चेतना का अंश हैं। (२)

आनीले दूधु रीधाईले खीरं ठाकुर कउ नैवेदु करउ ॥
देवता की मूर्ति के लिए प्रसाद के तौर पर चावल की खीर बनाने के लिए दूध लाया जाता है। यह स्मरण कराता है कि सच्ची भक्ति इस पहचान में है कि समस्त अन्न और पोषण उसी सर्वव्यापी शक्ति का रूप है।

पहिले दूधु बिटारिओ बछरै बीठलु भैला काइ करउ ॥३॥
बछड़ा पहले ही दूध पी चुका है, उसमें भी वही सर्वव्यापी चेतना विद्यमान है। हम क्या करें। यह शुद्ध और अशुद्ध की धारणा पर पुनर्विचार करने की प्रेरणा देता है, यह स्मरण कराते हुए कि सब कुछ दिव्य सृष्टि का ही अंश है। (३)

ईभै बीठलु ऊभै बीठलु बीठल बिनु संसारु नही ॥
वही सर्वव्यापी चेतना हर जगह, हर चीज़ में विद्यमान है। इस मूल स्रोत के बिना, संसार का अस्तित्व नहीं है।

थान थनंतरि नामा प्रणवै पूरि रहिओ तूं सरब मही ॥४॥२॥
नामदेव कहते हैं कि वह हर जगह और प्रत्येक दिशा में प्रणाम करते हैं क्योंकि वही सर्वव्यापी सत्ता सर्वत्र व्याप्त है। यह पूर्ण एकता की मानसिकता को दर्शाता है, जहां हर दिशा, अस्तित्व और क्षण को एक सार्वभौमिक उपस्थिति के रूप में अपनाया जाता है। (४)(२)

तत्त्व: भक्त नामदेव इस समझ को उजागर करते हैं कि सर्वव्यापी चेतना विभिन्न रूपों में, समस्त ब्रह्मांड को भर रही है। इस सर्वव्यापक सत्ता से उनका जुड़ाव उन्हें समस्त सृष्टि के प्रति श्रद्धा से भर देता है, क्योंकि प्रत्येक दिशा, प्रत्येक प्राणी और प्रत्येक क्षण उसी एक उपस्थिति से आलोकित है। यह अस्तित्व के आपस में जुड़ाव को दिखाता है। एक बार जब यह सच मान लिया जाता है तब भक्ति सिर्फ़ बाहरी रस्मों तक सीमित नहीं रहती, यह एक रूपांतरकारी दृष्टि बन जाती है, जिसके माध्यम से समस्त संसार पवित्र हो जाता है।

सबद व्याख्या **विनइंदर कौर** और **अमरदीप सिंह**

Oneness In Diversity Research Foundation
वेबसाइट: OnenessInDiversity.com
ईमेल: onenessindiversityfoundation@gmail.com